Edition 2 Volume 4

A multilingual Children's magazine

Conceptualised by: Tanya

Composed & Edited by : Vrinda

Designed by: Meenakshi

इस बार

1. मज़े वाली ईद
2. होली की धूम
3. ईद मुबारक
4. होली आई
5. किताबों का समंदर
6. मारी मैंस
7. अब मैं बड़ी हो जाऊँगी
8. डॉक्टर चींटी
9. Creative Corner
10. झलकियाँ

मज़े वाली ईद

अरशद- कक्षा 3, प्रा.वि. 1 , गुज्जर बस्ती

ईद के लिए मैंने बाल कटवाए ,
नए कपड़े लाए, फिर हम गले लगे।
ईद आ गई, मुझे चाँद नज़र आ गया।
ईद मना कर हमने हलवा खाया।
हलवा खाकर हमने रोटी खाई,
रोटी खाकर हमे ईदी मिली। ईदी
मिलकर हम खुश हो गये।
फिर हम फूफू के घर चले गए, फूफू ने
ईदी दी ।
हम फिर नाना के घर गए और वहाँ
भी हमे ईदी मिली।
मामू के यहाँ भी गए और वहाँ भी ईदी
मिली।

आप सबको ईद मुबारक

होली की धूम

हेमा, कक्षा २, प्रा. वि. लालढ़ांग

मैंने स्कूल में होली खेली थी, और मैं खूब सारे रंग लाई थी और बहुत गुब्बारे लाई थी। मुझसे इंटरवल तक इंतजार नहीं हो रहा था। जैसे ही इंटरवल हुआ मैने सबसे पहले नितिका को खूब रंग लगाया और फिर सबके साथ होली खेली। मेरा तो भूत बन गया था और बाकी भी भूत के जैसे लग रहे थे।

ईद मुबारक

जैनऊ ख़ातून, कक्षा ५,
प्रा. वि. I, गुज्जर बस्ती

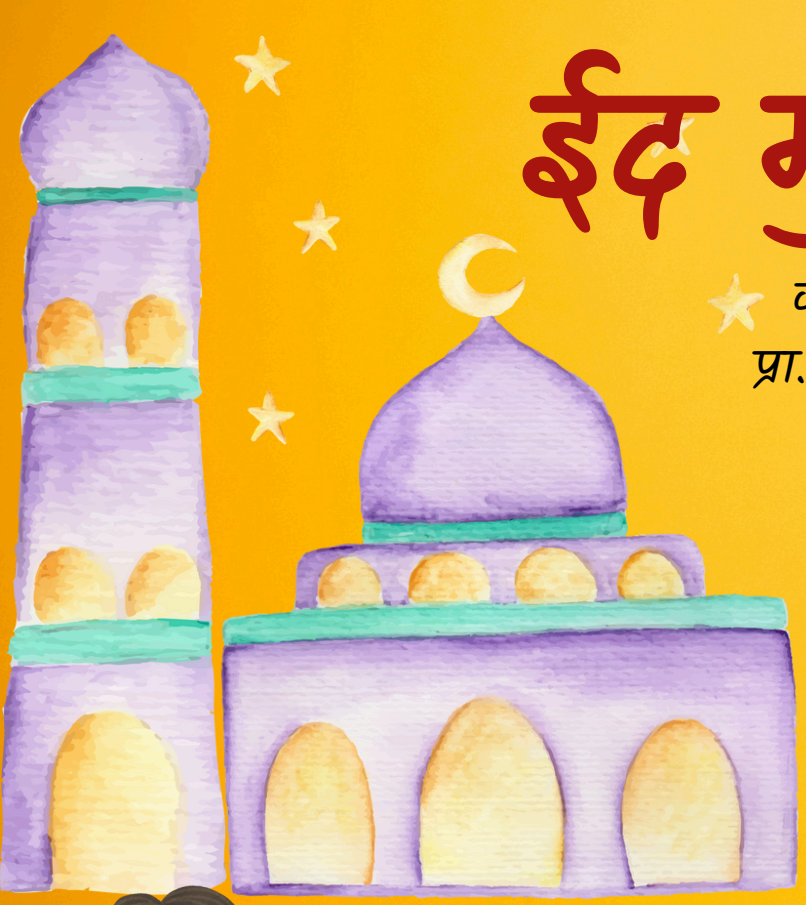

हमें ईद अच्छी लगती है। हमें ईद आने का इंतजार होता है। तो कपड़े लाते हैं, नई चप्पल लाते है, नई चूड़ी लाते हैं। नई बाल पिन लाते हैं, नई कुंडल लाते है। जिस दिन ईद आती है शाम को हम सब चाँद देखते हैं। चांद देखने के बाद हमे सब मेहंदी लगाते है। हम सुबह को नहाते है। नहाने के बाद ईद की नमाज पढ़ते है। हलुवा खाते है, खीर खाते हैं, सई खाते है। हम अपनी नानी के घर जाते है। नानो के घर में हलुवा खाते हैं।

होली आई

रोहित, कक्षा 3, प्रा. वि. लालढ़ांग

होली आई है
मज़ा आया है,

खूब लगाया रंग
तुम भी आओ
रंग लगाओ

धूम मचाओ
नाचो गाओ
रसगुल्ला खाओ।

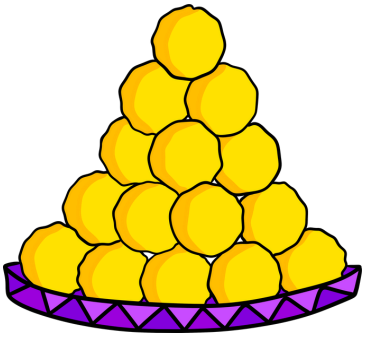

किताबों का समंदर

कादिल, कक्षा 3,
प्रा. वि. 1 गुज्जर बस्ती

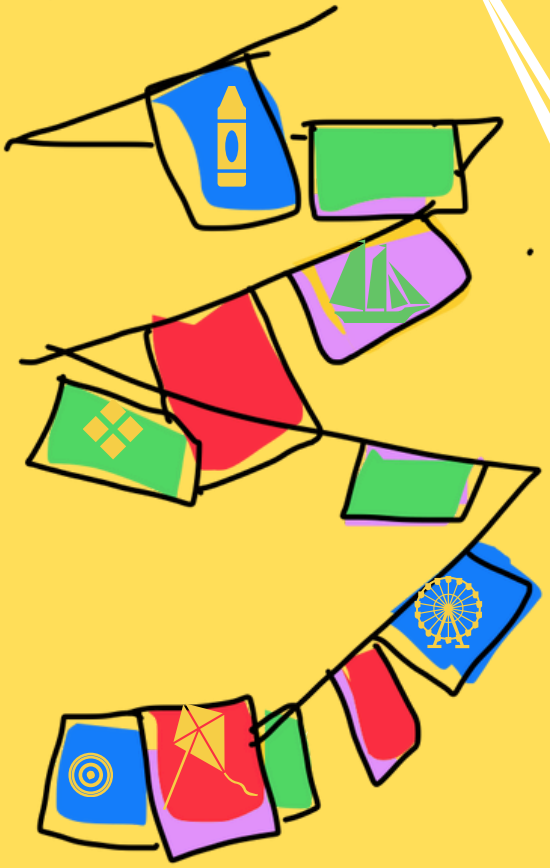

हम स्कूल आते थे और हमे अपने सर से इतना डर नहीं लगता था। हम जब लाइब्रेरी में आए तो इतना अच्छा लगा। हमने बहुत सारी कहानियाँ बनाई और सारी कहानियाँ चिपकाई।

हमने जनवरी, फ़रवरी चिपकाई और हमने Sunday,Monday का सूरज बनाया। हमने पहले भी 15 अगस्त पे एक पेड़ बनाया था जिसपर हमने रंगो से अंगूठे के निशान लगाए और उसे भी क्लास मे चिपकाया।

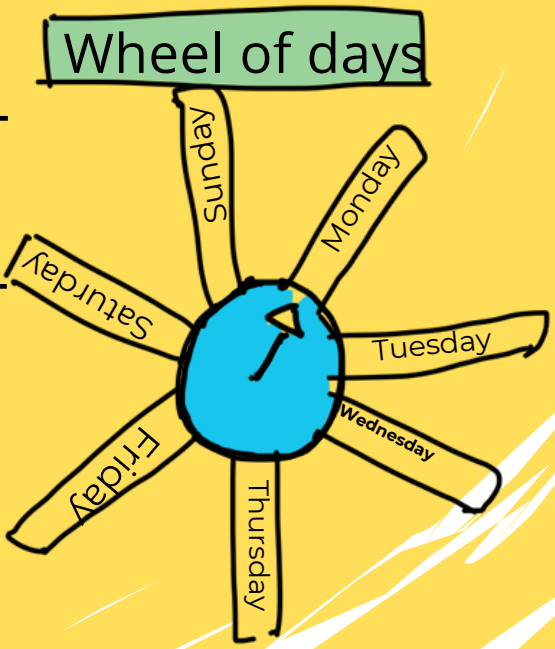

मारी मैंस

सद्दाम, समानता फैलो

या मैंस मारी ये"

या गबण बल्ली मारी ये।

या सबणा दे प्यारी ये"

अज इसकी बारी ये।

देतती कट्टी हर साल आई ये" या
सबणा गी सरदारी ये।

या मैंस मारी ये "

गबण बल्ली मारी ये।

या मैंस मारी ये "

इसकी सूण गी तैंयारी ये।

अब मैं बड़ी हो जाऊँगी

दीक्षा, कक्षा 4,प्रा. वि. लालढ़ांग

मैं अब कक्षा 5 में चली जाऊँगी। मुझे बहुत अच्छा लग रहा है क्योंकि कक्षा 5 स्कूल की सबसे बड़ी कक्षा है। मैं जब बड़ी कक्षा में चली जाऊँगी तो और ज़्यादा पढ़ाई करूँगी। छोटी क्लास के बचो को पढ़ाऊँगी और खूब मज़े करूँगी। इस बार नई ड्रेस भी मिलेगी।

मुझे स्कूल में बहुत मज़ा अता है। मुझे सबसे ज़्यादा मज़ा मीनाक्षी मेम की क्लास में अता है ।

हमारे स्कूल में सुंदर सी कक्षा है, जिस मे बहुत सारी कहानियों की किताबें हैं। उस क्लास का नाम हम सबने मिलकर **गपशप लाइब्रेरी** रखा है। वहाँ पर हम नए-नए खेल खेलते हैं और पढ़ते हैं। अब तो मैं जोड़ घटाव के सवाल भी कर लेती हूँ और हिन्दी भी पढ़ लेती हूँ। मैं बहुत अच्छी होती हो जा रही हूँ। मेम भी मेरी तारीफ़ करती हैं।

मैं बहुत खुश हो जाती हूँ।

डॉक्टर चींटी

शबाना कक्षा ५ प्रा. वि. । गुज्जर बस्ती

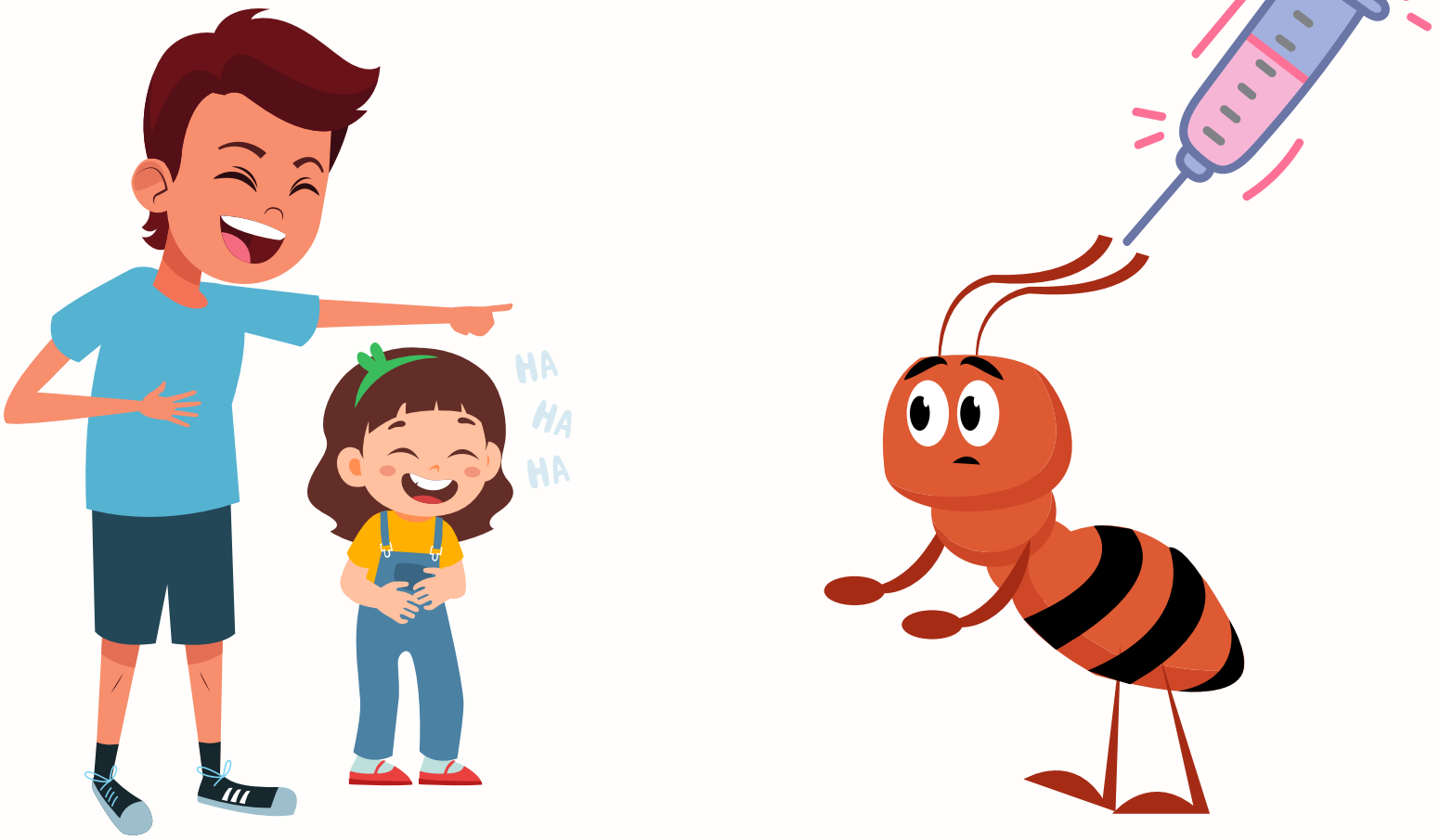

एक डॉक्टर चींटी थी। उसके ऊपर सब हस्ते थे, और कहते थे कि खेत में इतनी सारी चींटियां है ये क्या किसी का इलाज करेगी। एक दिन एक लड़की को कोरोना हो गया।

उन्हे कोई डॉक्टर नही
मिला फिर उन्होंने ने
चींटी डॉक्टर के पास जाने
की सोची और चींटी ने
लड़की का इलाज किया।

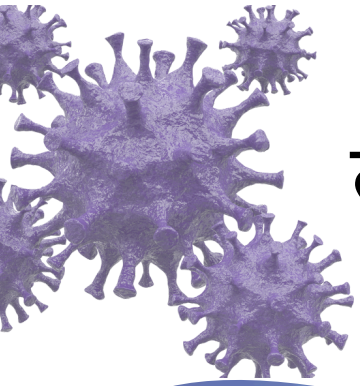

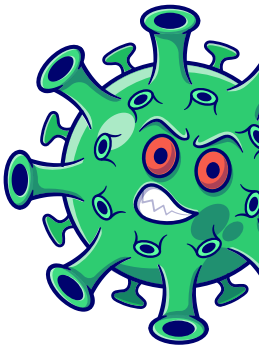

फिर लड़की कुछ दिनों
में ठीक हो गई। सबको
फिर अपने किए पर
पछतावा हुआ।

Creative Corner

झलकियाँ

Click to take a step with us

https://rzp.io/l/mtRuxy5T5

To know more click below:

Samanta Facebook LinkedIn Twitter Instagram